# काशी के घाट

अपनी निराली छटा के लिए दुनियाँ भर में मशहूर काशी के घाट जहाँ आज भी अध्यात्म, योग, धर्म और दर्शन के केंद्र हैं, वहीं देशी- विदेशी पर्यटकों आदि सभी के लिए आकर्षण के केंद्र भी हैं। गंगा नदी के किनारे अर्धचंद्राकार रूप में फैले, इन घाटों की शोभा- सुषमा अद्वितीय है। काशी के ये गंगाघाट न जाने कितने ही ऋषि- मुनियों, ऋषि- कल्प विद्वानों, तपस्वियों की साधना भूमि के रूप में आध्यात्मिक शक्ति, दिव्य ज्ञान और चिंतन की ऊर्जा प्रदान करते रहे हैं। अपने सौंदर्य और आकर्षण के लिए विख्यात, ये घाट काशी की सांस्कृतिक- ऐतिहासिक धरोहर है।

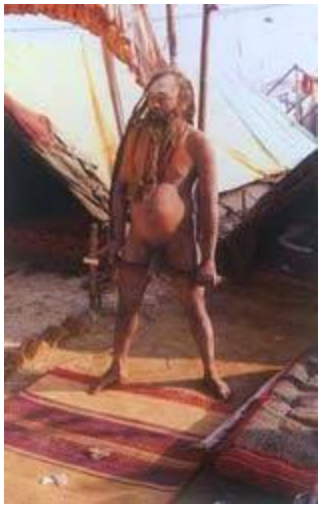

**'सुबहे बनारस' और काशी के घाट**

प्रातः काल इन घाटों की छटा देखते ही बनती है। बाल सूर्य की छाया जब गंगा में पड़ती है, तो मालूम पड़ता है कि बाल सूर्य मानो अंक पसारे गंगा की पवित्र धारा में अठखेलियाँ कर रहा है। सूर्य की स्वर्णिम किरण सीढ़ियों और घाटों पर बने मंदिर के शिखरों पर पड़ती है, तो लगता है कि समूचा गंगा तट अद्भुत ज्योति से प्रकाशित हो रहा है। भोर से ही स्नान- पूजन करने वाले स्त्री- पुरूषों का घाटों पर आने का जो क्रम शुरू होता है, वह दिन में देर गये तक चलता रहता है। शायद घाटों की प्रातः कालीन शोभा देखकर ही किसी ने कहा है -- 'सुबहे बनारस'। नगरीय कोताहल से दूर इन घाटों पर पवित्र शांति मिलती है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

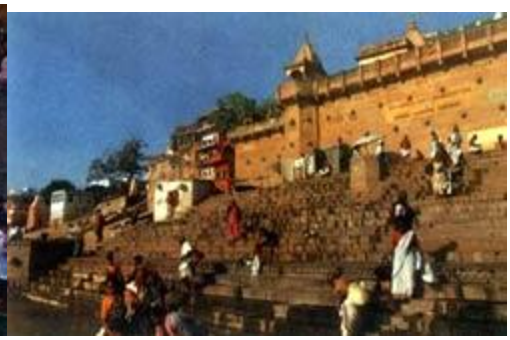

मानसिक शांति की खोज में देशी- विदेशी कितने ही लोग अपनी सुबह और शाम इन्हीं घाटों पर गुजारते हैं। हिप्पी युवक- युवतियाँ, वृद्ध तथा खासकर महिलाएँ सुबह- शाम गंगा स्नान और पूजन- अर्चन करती हैं। बच्चे भी पीछे नहीं रहते। गर्मी के दिनों में सुबह- शाम तैरना सीखने और तैरकर गंगा आर- पार करने के लिए, जाड़े में दिन- भर गंगा तट पर पतंग उड़ाने और लूटने वालों बच्चों के लिए गंगा के ये घाट आदर्श स्थल बन गये हैं। काशी के घाटों की हर शाम चहल- पहल भरी होती है। नौका विहार कर घाटों का दृश्यावलोकन करते तथा घाटों पर घूमते, कथा सुनते, एकांत में बैठे, गाँजे का दम लगा रहे या फिर किसी चर्चा में मशगूल कितने ही लोग घाटों पर दिखलायी पड़ेंगे।

रात का अंधेरा ज्यों- ज्यों घना होता जाता है, रामनगर के किले, अस्सी वाटर वर्क्स के पंप और राजघाट के पुल पर लगी फ्लैश लाइट की रोशनी तेज हो जाती है। इस रोशनी का साथ देती है -- मणिकर्णिका घाट और हरिश्चंद्र घाट के श्मशान की धू- धू कर ऊँची उठती लपटें, जिन्हें जीवन की नश्वरता की संदेशवाहिका भी कह सकते हैं। शाम को ही दशाश्वमेध घाट पर गंगा महासभा की ओर से गंगा जी की आरती का आयोजन होता है। घड़ी- घण्टे की आवाज के साथ होने वाली यह आरती काफी रोचक होता है। शाम को ही यात्री और भक्तगण पत्तों से बने दोने या मिट्टी के पात्र में दीपक जलाकर गंगा में प्रवाहित कर देते हैं। कभी- कभी तो गंगा की शांत, मंद गति से बह रही जलधारा में सैकड़ों की संख्या में तैरते दीपक अत्यंत आह्लादकारी एवं मनोरम दृश्य उत्पन्न करते हैं।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

**निराली छटा**

मनोहर घाटों पर सुशोभित मंदिर, बांस से बने छाते, दैनिक पूजन- अर्चन में लीन श्रद्धालू भक्तजन, अस्सी और दूसरे घाटों पर बजड़ों में रहने वाले हिप्पी, धारा में बह रहे सद्यः सांसारिक जाल से मुक्त हुए जीवों के शव, संन्यासियों की गेरुए रंग में रंगी कोठरियाँ अजीब से दृश्य की सृष्टि करती हैं। पत्थर और संगमरमर के बने नये- पुराने भवन, जीर्ण- शीर्ण शाही इमारतें और खण्डहर राज्याश्रय की याद में मानो बिलख रहे हैं। घाटों के किनारे राजा- महाराजाओं और रईसों ने धार्मिक दृष्टि कोण से भव्य भवन बनवाये थे।

अब इन भवनों की जीण- शीर्ण दीवारों पर विज्ञापन और 'चोरों से सावधान' जैसी सूचनाएँ लिख दी गयी हैं। सुबह- शाम नाव में बैठे भाँग- बूटी छानते- घोंटते लोग, रामलीला के दिनों में रंग- बिरंगे पाल फहराती रामनगर की ओर बढ़ रही

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

नौकाएँ इस प्राकृतिक सौंदर्य में वृद्धि करती हैं। सुबह- शाम हर रोज गंगा पार जाकर 'दिव्य निपटान' बिना कितने ही लोगों को चैन नहीं मिलता। घाटों पर बंधी लहरों से खेलती छोटी- बड़ी नौकाएँ, बजड़े भी मानों मुक्ति की प्रतीक्षा में हैं। घाटों पर जगह- जगह ठंडे, गर्म पानी के सोते हैं। गंगा के किनारे तीन भव्य 'गंगामहल' बने हैं। घाटों पर पहुँचने के लिए संकरी गलियों से होकर जाना पड़ता है।

घाटों की स्थिति उत्तरोत्तर खराब होती जा रही है। गंगा में गिरने वाले नालों की गंदगी भी गंगा को धार्मिक दृष्टि से भले ही अपवित्र न बनाती हो, वैज्ञानिक दृष्टि से गंगा का पानी निरंतर पिछले कई दशकों से दूषित होता जा रहा है। अधिकांश घाटों की दशा बिल्कुल खराब हो चुकी है। हर साल गर्मियों में कई घाटों पर तैराकी और नौका दौड़ की प्रतियोगिताएँ होती थीं, पर अब धनाभाव तथा उत्साह की कमी के कारण, इन प्रतियोगिताओं का आयोजन प्रायः नहीं होता।

घाटों पर पहले मछली मारने की मनाही थी। कुछ घाटों पर भक्त लोग मछली मारने से लोगों को रोकते हैं, पर बढ़ती हुई क्षुधा की शांति के लिए मछली का सहारा लेने वालों की संख्या बढ़ती ही जा रही हे। काशी को 'मंदिरों का शहर' कहने वालों ने जरूर इन घाटों से ही काशी को देखा होगा। घाटों के किनारे अनगिनत मंदिर हैं, अनेक देवी- देवताओं के। इनसे काशी की गरिमा बढ़ी है। ये सतत् आकर्षण के केंद्र हैं। इन्होंने देशी- विदेशी, सभी लोगों को समान रूप से आकर्षित किया है।

## इतिहास के साक्षी घाट

इन घाटों ने भी जमाना देखा है। कितने राजा- महाराजा काशी आये और मुक्ति को प्राप्त हुए, पर ये घाट आज भी उनके वैभव और शानो- शौकत के गवाह हैं। घाटों के बीच गंगा की धारा से देखिए, लगेगा हर घाट अपने- आप में एक कहानी, एक इतिहास छिपाये हैं और यही इतिहास हर पल इन घाटों पर मुखरितं- सा होता रहता है। 'नमःशिवाये गंगाये शिवदाये नमोनमः' की गूँजती मंत्र- ध्वनि के बीच घाटों पर पूजा- पाठ, स्नान और संध्या वंदन करते ऋषि- कल्प, नर-नारियों को देखकर मानों यहाँ भूतल पर स्वर्ग उतर आया हो।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

त्योहारों और पर्वों से भी घाटों का संबंध है। महत्वपूर्ण धार्मिक पर्वों, सूर्य और चंद्र ग्रहण के अतिरिक्त डाला छठ, गंगा पुजइया आदि कुछ ऐसे अवसर हैं, जब सभी को घाट तक जाना पड़ता है। ऐसे अवसरों पर चहल- पहल होना स्वाभाविक है। दुर्गाघाट की मुक्की और मीरघाट की लाठी की लड़ाई अब गये जमाने की बात हो चुकी है। दुर्गाघाट पर लोग 'मुक्की' चलाने का अभ्यास करते थे। साल भर छोटी- मोटी प्रतियोगिताएँ होती थी। साल में एक दिन शहर भर के मुक्की- बाज दुर्गाघाट पर जुटते थे, मुक्की दंगल होता था और कितने ही लोग मुक्कीबाज की चोट खाकर भी प्रसन्नता के साथ पान घुलाने वापस चले आते थे। मीरघाट की लाठी की लड़ाई का रोमांचक विवरण सुनकर तो आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मानमंदिर और मीरघाट के लट्ठबाजों का दल शाम को सप्ताह में एक बार इकट्ठा होता और लाठी की लड़ाई होती। कितने ही बाँकुरे लाठी की चोट से कराहते, दूसरे पक्ष के बहादुरों को 'जियद्मराजा' की शाबासी देते घाट से घर लाये जाते थे। काफी दिनों तक लाठी की लड़ाई की परंपरा चली, पर अब केवल किस्से ही शेष हैं। वस्तुतः यहाँ घाटों से जीवन की गतिविधियाँ जुड़ गयी हैं।

दूर- दूर से लोग काशी में शवदाह तथा शव के विसर्जन हेतु घाटों पर आते हैं। पर्यटकों, शांति के खोजियों के लिए घाटों का महत्व शायद ही कभी कम हो। घाटों पर चहल- पहल पहले से बहुत बढ़ गयी है। पहले घाटों पर केवल धार्मिक आयोजक हुआ करते थे, अब हर तरह के लोग दिखायी पड़ेंगे। हर तरह के राजनीतिक, सामाजिक कार्यक्रम घाटों पर भी होने लगे हैं। इससे घाटों की शांति भंग हुई है। एक बात और कि घाटों पर दूकानें बनने लगी हैं। भिक्षुकों की संख्या बढ़ी है, बेघरबार लोगों की संख्या बढ़ने से यहाँ सोने और जीविका कमाने वाले बढ़ते ही जा रहे हैं। इसे देखकर घाटों के भावी स्वरूप की जो कल्पना मन में आती है, उससे लगता है, आगे चल कर इन घाटों पर भी शांति नहीं मिल पायेगी। अधिकारी, काशी के नागरिक और केंद्र तथा प्रदेश सरकारों ने यदि घाटों पर बढ़ रहे भीड़ के दबाव को रोकने का प्रयास न किया, तो निश्चय ही मौज- मस्ती के केंद्र ये घाट तथा कथित 'नये रईसों के चरागाह' बन कर रह जायेंगे।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

अस्सी और वरुणा के बीच दक्षिण की ओर से क्रमशः काशी के इन घाटों के नाम हैं -- अस्सी, गंगामहल, रीवां, तुलसी, भदैनी, जानकी, माता आनंदमयी, जैन, पंचकोट, प्रभु, चेतसिंह, अखाड़ा, निरंजनी, निर्वाणी, शिवाला, गुलरिया, दण्डी, हनुमान, प्राचीन हनुमान, मैसूर, हरिश्चंद्र, लाली, विजयानरम्, केदार, चौकी, क्षेमेश्वर, मानसरोवर, नारद, राजा, गंगा महल, पाण्डेय, दिगपतिया, चौसट्टी, राणा महल, दरभंगा, मुंशी, अहिल्याबाई, शीतला, प्रयाग, दशाश्वमेघ, राजेन्द्र प्रसाद, मानमंदिर, त्रिपुरा भैरवी, मीरघाट, ललिता, मणिकर्णिका, सिंधिया, संकठा, गंगामहल, भोंसलो, गणेश, रामघाट, जटार, ग्वालियर, बालाजी, पंचगंगा, दुर्गा, ब्रह्मा, बूँदी परकोटा, शीतला, लाल, गाय, बद्री नारायण, त्रिलोचन, नंदेश्वर, तेलिया-नाला, नया, प्रह्लाद, रानी, भैंसासुर, राजघाट तथा आदिकेशव या वरुणा संगम घाट।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

इन घाटों में दशाश्वमेध घाट सर्वाधिक प्रसिद्ध है। विशेष धार्मिक पर्वों पर देश के कोने- कोने से लोग यहाँ आते हैं। अस्सी घाट पहला घाट है। यहीं से वाराणसी की सीमा शुरू होती है, तुलसी घाट पर प्रसिद्ध तुलसी मंदिर है, जहाँ रहकर गोस्वामी तुलसीदास जी ने सन् १५७६ में रामचरित मानस के अंशों की रचना की थी। हनुमानघाट, केदारघाट के निकट दक्षिण भारतीयों की बस्ती है। यहाँ प्रसिद्ध हनुमान मंदिर है। विजयानगरम् घाट तथा मैसूर घाट क्रमशः विजयानगरम् तथा मैसूर के राजाओं ने बनवाये हैं। राजघाट पर पूना के राजा बाजीराव पेशवा का भवन है। राणामहल घाट पर महाराणा प्रताप का प्राचीन महल है। इसका निर्माण उदयपुर के राजाओं ने कराया था।

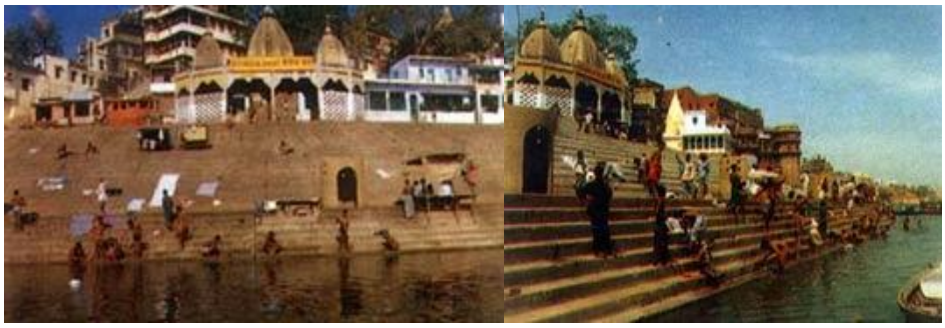

दरभंगा घाट पर दरभंगा के राजा की भव्य कोठी है। कहते हैं यहीं पूरे उत्तर प्रदेश में पहली लिफ्ट लगी थी। लिफ्ट की मशीन के अवशेष अब भी अपने बीते दिनों के वैभव की कहानी कह रहे हैं। अहिल्याबाई घाट पर प्रतिदिन बंगालियों के सत्संग का आयोजन होता है। यह घाट इंदौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने बनवाया था। उन्होंने ही काशी विश्वनाथ मंदिर का भी निर्माण कराया था। शीतला घाट पर स्थित शीतला मंदिर में बच्चों के मुंडन आदि धार्मिक एवं शुभकृत्य करने वालों की भीड़ रहती है। प्रायः शहनाई की सुमधुर ध्वनि सुनायी पड़ती है। आर- पार की माला चढ़ाने वाले बजड़े गंगा की मध्य धारा में बड़े सुहावने लगते हैं। राजेन्द्र प्रसाद घाट का नाम पहले घोड़ा घाट था।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

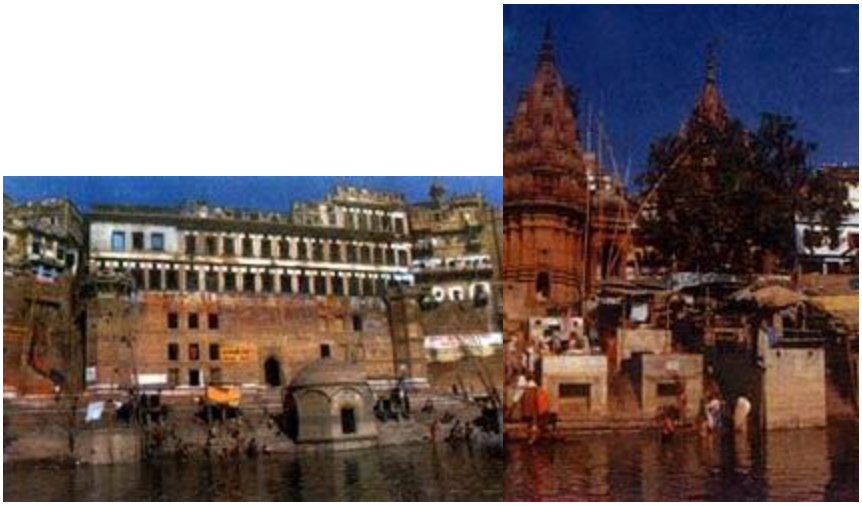

मानमंदिर घाट पर राजा सवाई जयसिंह की भारतीय पद्धति की वेधशाला और भव्य भवन भी है। इसी के बगल में पहले गल्ली घाट था, जिसका नाम भी बहुत से लोग नहीं जानते। मणिकर्णिका घाट तथा हरिचंद्र घाट दाह- संस्कार के स्थल हैं। कहते हैं, मणिकर्णिका पर अहर्निशं निरंतर शवदाह होते रहना जरूरी है, अन्यथा नगरवासियों को विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

पंचगंगा घाट पर बिंदुमाधव का मंदिर और माधवराव का धरहरा है, जहाँ से सारा शहर दिखलायी पड़ता था। बिंदु- माधव के पुराने मंदिर का तोड़कर यहाँ औरंगजेब ने मस्जिद बनवा दी थी। बूँदी परकोटा घाट पर बनी भव्य इमारत अब ध्वस्त हो चुकी है। आदिकेशव घाट, घाटों की श्रृंखला में अंतिम है। इसे वरुणा संगम घाट भी कहते हैं।

अस्सी घाट के नजदीक शिवाला घाट का राजा बलवंत सिंह ने कलात्मक ढ़ग से निर्माण कराया था। घाट के ऊपर बने राज महल में बगीचा और बड़ा हाल है। इसी स्थान पर ईस्ट इण्डिया कंपनी के जमाने में राजा चेतसिंह की चर्चित लड़ाई के समय राजा चेतसिंह को महल छोड़कर भागना पड़ा था।

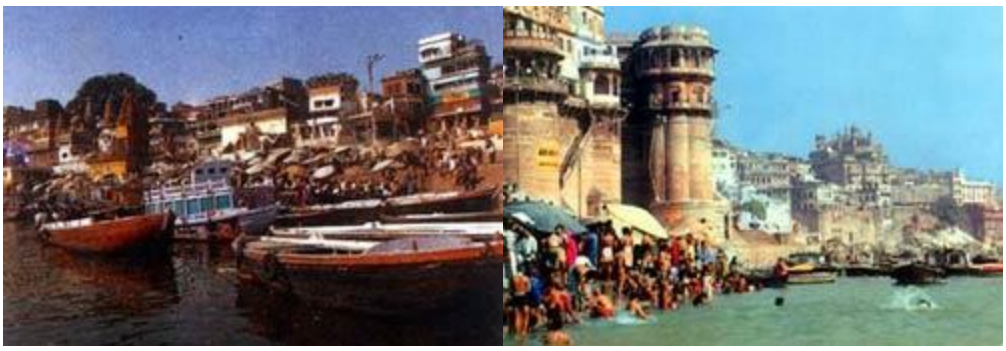

कहते हैं, अयोध्या के राजा हरिश्चंद्र विश्वामित्र को राज्यदान करने के बाद हरिश्चंद्र घाट पर आये और यहीं पर उन्होंने डोमराजा के यहाँ नौकरी की। इसी लिए उस घाट का नाम हरिश्चंद्र घाट पड़ा। आज भी यहाँ शवदाह होता है।

मानसरोवर घाट का आमेर (राजस्थान) के राजा मानसिंह के निर्माण कराया था। बंगाल के राजा दिगपति ने चौसट्टी

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

घाट बनवाया, जहाँ ६४ भुजावाली चौसट्टी देवी का मंदिर है। नागपुर के भोसलो राज्य के दीवान मुंशी श्रीधर नारायण दास ने मुंशीघाट का निर्माण कराया। बाद में इसे दरभंगा के महाराज ने खरीद लिया। दशाश्वमेघ घाट के बारे में पुराणों में कहा गया है कि यहीं पर ब्रह्मा ने दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। इसलिए इसका नाम दशाश्वमेघ घाट पड़ा।

मीरघाट का निर्माण अवध के नवाबों द्वारा नियुक्त गवर्नर मीर अली ने कराया था। यहीं काशी नरेश के भूतपूर्व दीवान मुंशी दयाशंकर का भी भव्य भवन है। आगे ललिता घाट पर राजराजेश्वरी ललिता का मंदिर तथा नेपाल के राज- परिवार का आवास है, जो अब जर्जर हो चुका है। यहीं प्रसिद्ध नेपाली मंदिर भी है, जिसमें काष्ठ तथा पत्थर पर काम्रकीड़ा की अनेक स्थितियों का कलात्मक चित्रण है। मणिकर्णिका घाट को ही काशी का 'महाश्मशान' भी कहते हैं। पुराण की कथा के अनुसार मणिकर्णिका घाट का नाम पार्वती के कान का कुंडल ( मणि ) गिरने से संबद्ध है। यहीं उनका कुंडल गिरा था। भगवान शंकर पहले क्रुद्ध हुए, पर बाद में प्रसन्न होकर उन्होंने इस स्थान को शाश्वत् पवित्रता प्रदान कर दी। यहीं मणिकर्णिका कुण्ड (तालाब) है, जो चक्रपुष्करिणी तीर्थ नाम से विख्यात है।

सिंधिया घाट का निर्माण सन् १८३० में ग्वालियर की महारानी बैजाबाई सिंधिया ने कराया। १९४९ में इसका जीर्णोद्धार हुआ। यह घाट काशी के बड़े तथा सुंदर घाटों में से एक है। यहीं पर आत्माविरेश्वर तथा दत्तात्रेय के प्रसिद्ध मंदिर हैं। संकठा घाट पर बड़ौदा के राजा का महल है। इसका निर्माण महानाबाई ने कराया था। यहीं संकठा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। घाट के अगल- बगल के क्षेत्र को 'देवलोक' कहते हैं। १७९५ में नागपुर के भोसला परिवार ने भोसला घाट बनवाया। घाट के ऊपर लक्ष्मी नारायण का दर्शनीय मंदिर है। राजघाट का निर्माण लगभग दो सौ वर्ष पूर्व जयपुर महाराज ने कराया।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

रामनवमी के अवसर पर यहाँ स्थित सीताराम मंदिर में महत्वपूर्ण उत्सव होता है। पंचगंगा घाट की मढ़ियाँ वास्तुकला की उत्कृष्ट उदाहरण हैं। लोग मानते हैं कि गंगा की धारा के अंदर से आकर भारत की पाँच प्रमुख नदियों, गंगा, यमुना, सरस्वती, किरण तथा धूतपाप की धारा यहाँ एक में मिलती है, पर वैज्ञानिक इसे नहीं मानते। गायघाट के बारे में यह धारणा प्रचलित है कि भगवान कृष्ण की गायें यहाँ पानी पीती थीं। राजघाट कच्चा घाट है। यहाँ काशी के पुराने राजा महाराजाओं के महल के ध्वंसावशेष अब भी मिलते हैं। संभवतः प्राचीन काशी की राजधानी यहीं थी। आदिकेशव या वरुणा संगम घाट, गंगा और वरुणा नदियों के संगम पर स्थित हैं। चैत्र वारुणी के अवसर पर यहाँ स्नान का विशेष महत्व है। अंतिम आदि केशवघाट के पहले राजघाट का पुल है।

संस्कृत के विख्यात कवि पं. राज जगन्नाथ ने यवनी से विवाह किया। लोग रुष्ट हुए। लोगों के वाक् आघात को कविवर सहन नहीं कर सके। पंडितों ने कहा – 'पंडितराज जगन्नाथ के शुद्धीकरण की जरूरत है।' इन्हीं घाटों में से एक पंचगंगा घाट की ५२ सीढ़ियों को पार कर गंगा ने पंडितराज का परिशुद्धीकरण किया। कहते हैं पंडितराज भगवती भागीरथी गंगा की स्तूति के एक- एक श्लोक की रचना करते गये और गंगा एक- एक सीढ़ी ऊपर आती गयीं। इस तरह उन्होंने ५२ श्लोकों की रचना की। यह पूरी संस्कृत रचना आज भी 'गंगा- लहरी' नाम से विख्यात है। सद्यः गंगा- स्नान से पंडित राज शुद्ध हो गये।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

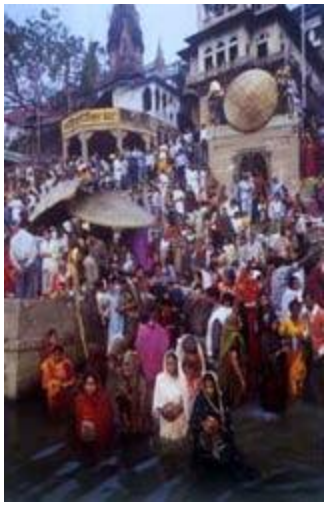

काशी में गंगा उत्तरवाहिनी हैं। गंगा के बायें किनारे पर बने काशी के अधिकांश घाट पक्के पत्थर के बने हैं। घाटों की सीढ़ियों से होकर गंगा तक पहुँचा जा सकता है। घाटों के सौंदर्य के संबंध में प्रख्यात कला समीक्षक श्री ई. बी. हैवेल ने कहा है -- ये घाट छः मील की परिधि में फैले प्रेक्षागृह की तरह शोभायमान होते हैं। प्रातःकाल, सुनहरी धूप में चमकते गंगा तट के मंदिर, मंत्रोच्चार और गायत्री जाप करते ब्राह्मणों और पूजा- पाठ में लीन महिलाओं के स्नान- ध्यान के क्रम के साथ ही दिन चढ़ता जाता है। पुष्प और पूजन सामग्रियों से सजे गंगा तट तथा पानी में तैरते फूलों की शोभा मनमोहक होती है।

काशी के घाट हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। इनकी रक्षा एवं सौंदर्य वृद्धि की अनेक योजनाएँ सरकार ने प्रारंभ की हैं। गंगा जल का प्रदूषण काशी की एक गंभीर समस्या है। इससे घाटों के सौंदर्य को भी खतरा है। प्रदूषण रोकने का कारगर प्रयास आवश्यक है, ताकि ये घाट अनंत काल तक अपने सौंदर्य की महत्ता से सभी को आकर्षित करते रहें।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

# वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

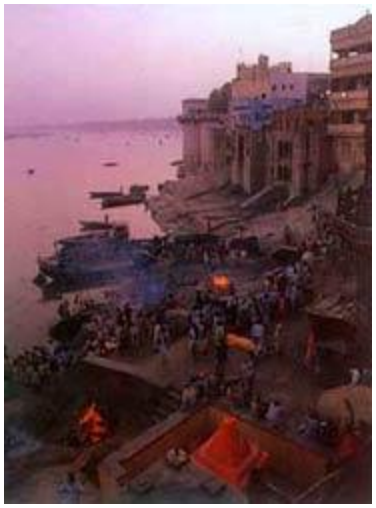

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.